शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'निबंधमाला'

शीर्षक - 'गाँधी जी और मैं'

लेखक - पंडित रामनंदन मिश्र

प्रश्न:- लेखक को साबरमती आश्रम क्यों अच्छा लगता था। वे कब सोशलिस्ट पार्टी में शामिल हुए। इसका मुख्य कारण क्या था।

उत्तर:- पंडित रामनन्दन मिश्र ने अपने संस्मरणात्मक निबंध में गाँधी जी के साथ व्यतीत किए गये पलों का विस्तार से वर्णन किया है। लेखक श्रीमिश्र जी को साबरमती का निवास बहुत अच्छा लगता था। इस आश्रम में आकर्षण के कार्यक्रम के अतिरिक्त यहाँ मिश्र जी के लिए दूसरे आकर्षण आचार्य कृपलानी जी थे और तीसरी सारा भाई की पुत्री मृदुला सारा भाई थीं। मृदुला जी यूथ लीग का संचालन करती थीं।

साबारमती आश्रम में नियमानुसार, सबको एक घंटा श्रम करना पड़ता था। इस समय गाँधी जी स्वयं तरकारियाँ काटते थे। रामनन्दन जी को हंडा माँजने का काम मिलता था। एक बार रामन्दन जी गाँधी जी के साथ भोजन कर रहे थे। सब्जी उबाली हुई थी। गाँधी जी ने पूछा कि रामनन्दन जी को सब्जी कैसी लग रही है। रामनन्दन जी ने जबाव दिया:- सब्जी तो मैं खीच के साथ खा लेता हूँ। परन्तु बापू जी मुझको एक शिकायत करनी है। गाँधी जी ने कहा कि अवश्य कहिए। पंडित मिश्र जी कहते हैं कि यहाँ तो मुझसे चार जनों का काम लेते है पर भी मात्र एक चम्मच देते हैं। गाँधी जी हँस पड़े। उन्होंने आदेश दिया कि कल से रामनन्दन जी चार चम्मच घी दिया जाए।

1930 ई० और 1932 ई० में जब सत्याग्रह-आन्दोलन ~~समाप्त~~ विफल हो गया तो पंडित-रामनन्दन मिश्र जी नवगठित सोशलिस्ट पार्टी

शेष आगे-

में सम्मिलित हो गये। इसके साथ ही काँग्रेस से उनका नाता टूट गया। परन्तु उन्होंने अपने संस्मरणात्मक निबंध में यह लिखा है कि गाँधीजी को जब इसकी जानकारी हुई तो वे हँस पड़े। उन्होंने कहा कि रामनन्दन मेरा है। वह कहीं अन्यत्र जाने वाला नहीं है। यह जानकर मिश्र जी को गाँधी जी के प्रति और अधिक श्रद्धा हो गयी।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०ऊ०सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
11/12/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अनिवार्य-पत्र
जयद्रथ-वध - काव्य खण्ड
कवि - श्रीमैथिलीशरण गुप्त

करता पयोदों को प्रभंजन शीघ्र अस्त व्यस्त ज्यों,
करने लगे तब ध्वस्त अर्जुन शत्रु-सैन्य समस्त त्यों,
वे रिपु-शिरों को काटकर रणभूमि यों भरने लगे -
रण-चण्डिका पूजन सरोजों से यथा करने लगे ।।

भावार्थ:- प्रस्तुत पद्यांश में पांडवों और कौरवों की सेना के बीच घमासान युद्ध का वर्णन किया गया है। इसमें विशेष रूप से अर्जुन की प्रहार शक्ति का वर्णन हुआ है। कवि कहता है कि जिस प्रकार तेज आँधी शीघ्र ही बादलों को अस्त-व्यस्त कर देता है उसी प्रकार अर्जुन समस्त कौरव दल की सेना को करने लगे। वे शत्रुओं के सिरों को काट-काट कर रणभूमि को इस प्रकार भरने लगे मानो वह रण की देवी चंडिका का पूजन मुख कमल से कर रहे हों।

कवि इस पद के द्वारा रणभूमि में अर्जुन के युद्ध कौशल का प्रभावशाली ढंग से वर्णन किया है। अर्जुन प्रतापी योद्धा के समान युद्ध भूमि में अपने कौशल और पराक्रम का प्रदर्शन किया है।

डॉ० देवचरण प्रसाद 11|12|20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० क० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
दिगंत-भाग-2 - काव्य खण्ड
शीर्षक: 'तुमुल कोलाहल कलह में'
कवि - जयशंकर प्रसाद

तुमुल कोलाहल कलह में
मैं हृदय की बात रे मन!
विकल होकर नित्य चंचल,
खोजती जब नींद के पल,
चेतना थक सी रही तब,
मैं मलय की बात रे मन!

भावार्थ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ महाकवि जयशंकर प्रसाद रचित हैं तथा उनके प्रसिद्ध महाकाव्य 'कामायनी' के एक गीत की है। इसमें कामायनी की नायिका 'श्रद्धा' ने अपने को 'हृदयकीबात' से उपमित किया है। 'हृदय की बात' पद प्रेम, दया, ममता आदि कोमल, मधुर और प्रिय भावों का सूचक है। तुमुल कोलाहल कलह का कारण स्वार्थ और आपाधापी है। इसमें असंख्य हल्के स्वर मिलकर महा कोलाहल बन जाते हैं और इस कोलाहल में कोई किसी की नहीं सुनता है। यह कोलाहल-कलह संसार की अशान्ति का सूचक है। यह एक समस्या है कि कैसे अशान्त और तनाव भरा विश्व जीवन सुखमय बने। कवि ने श्रद्धा के माध्यम से समाधान दिया है कि इस अशान्ति को दूर करने का एक मात्र रास्ता है - श्रद्धा भाव की प्रतिष्ठा। 'मैं हृदयकीबात' एक लाक्षणिक प्रयोग है जो समस्त अच्छे और प्यार भरे व्यवहारों का सूचक है।

छायावादी कवि प्रसाद जी ने अपने गीत की इन पंक्तियों में श्रद्धा की महिमा का गान किया है। श्रद्धा इस गीत की गायिका है। अतः ये भाव उसके हैं। वह कहती है कि चेतना तुमुल कोलाहल कलह से सतत विकल और चंचल है। वह एक पल के लिए सुख की नींद खोज रही है। खोजते-खोजते वह थक-सी गयी है। इस परिस्थिति में मैं इस चेतना को सुख और शान्ति

शेष आगे-

की नींद देने में मलय पर्वत से आने वाली मादक मधुर हवा हूँ।

कवि प्रसाद जी यह कहना चाहते हैं कि आज युद्ध, स्वार्थ, संवेदन शून्यता, वैज्ञानिक होड़ तथा धन बटोरने की आतुरता के कारण सारे संसार के लोग अशान्त हैं। उनका चित तनाव से भरा हुआ है। ऐसी दशा में उनको सुख की नींद प्रदान की क्षमता केवल श्रद्धा भावना में है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

11|2|20